Women's Struggle in Hindi and Kannada Autobiographies

Dr. Jayalaxmi M Kattimath

हिंदी और कन्नड आत्मकथाओ में नारी संघर्ष

डॉ जयलक्ष्मी एम क ीमठ
सह -प्राध्या पका
श्रीमती वी एच डी गृह वज्ञान संस्था
शेषादरी रोड बेंगलुरु

साहित्य व्यक्ति के मन को प्रतिबिम्बत करनेवाला प्रमुख एवं सक्षम माध्यम हैं। व्यक्ति के चंतन -मनन को अ भव्यक्ति प्रदान करने का काम साहित्य ही करता हैं। समाज व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में महत्व पूर्ण भू मका निभाता हैं। हिंदी की साहित्य परम्परा अत्यंत वशाल और समृद्ध रही हैं। साहित्य की अनेक वधाओं नें इस परम्परा को सम्पन्न एवं अक्षुण्य बनाने का भरसक प्रयास कया हैं। इसकी व भन्न वधाओं में आत्मकथा का वशेष स्थान हैं।

हिंदी और कन्नड़ की आत्मकथाओं में अ भव्यक्त नारी संघर्ष को व भन्न प्रकार के संघर्षों में अ भव्यक्त कया गया है।

हिंदी और कन्नड़ की आत्मकथाओं में पारिवारिक संघर्ष समान रूप में दिखाई देता हैं। स्त्री जन्म लेते ही उपेक्षा की दृष्टी से देखना, भाई - बहनो के बीच असमानता, दहेज देते समय माता - पता का संघर्ष करना, ववाह संबंधी समस्याएँ, पति एवं पति के परिवारवालों से समायोजन के लए संघर्ष, बच्चों के पालन - पोषण करते समय संघर्ष, स्वास्थ्य संबंधी समस्या, इत्यादि संघर्ष हिंदी और कन्नड की आत्मकथाओं में समान रूप से देखने को मलते हैं।

अनिता राकेश जी द्वारा ल खत आत्मकथा 'सतरे और सतरे' में भाई - बहन में फर्क करने पर वह लखती हैं अनीता जी को एक छोटा भाई था। माँ भाई में फर्क करती थी। भाई सब कुछ इस लए करता था क वह लड़का था। अनिता जी लखती हैं - माँ को मेरा भाई हर तरह से मुझसे बेहतर लगता था। और न भी हो तो उसका लड़का होना ही उन्हें एक बड़ी गर्व लगती थी। वह यह काम कर सकता हैं क्यो क वह लड़का हैं। वह हँस सकता हैं, क्यों क वह लड़का हैं। वह खेल सकता हैं, क्यों क वह लड़का हैं। वह कुछ भी कर सकता हैं, क्यों क वह लड़का हैं। मैं कुछ नहीं करती क्यों क मैं लड़की हूँ।

कन्नड के रंगमंच के कलाकार भार्गवी नारायण जी की आत्मकथा 'नानू भार्गवी' में भार्गवी की माताजी बेटा और बेटी में फर्क करती हैं। भाई जब मैट्रिक परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ तो घर में त्योहार के समान खुशी का वातावरण था। ले कन भार्गवी जी ज़ब मेट्रिक परीक्षा पास करती हैं तो उसके लए कोई

महत्व ही नहीं था। माँ बेटा - बेटी के भोजन में भी फर्क करती थी। घी, पापड़, आलू भाई के पसंद थे। माँ बेटे को ही ज्यादा देती थी। भाई को नहाने के लए गरम पानी मलता था और बहन को ठंडा पानी। वें लखती हैं, हमेशा हमारे समाज में लड़ कयो के लए दूसरा स्थान प्राप्त हैं। लड़का वंशोधारक हैं, घर के सुख - दुःखो को कंधा देने की जिम्मेदारी उस पर रहती हैं, स्त्री एक आयु तक घर की बेटी, उसके बाद दूसरे घर एवं मन को उजागर करनेवाली होती हैं।

दहेज के कारण संघर्षरत स्त्रियों के कई उदाहरण आत्मकथाओं में मलते हैं। अनिता राकेश जी की माता जी दहेज के संदर्भ में जो व्यवहार बना था उसके बारें में लखती हैं - माँ मुझ पर सर्फ इस लए गुस्सा निकालने लगी थी क मैं अब एक बहुत बड़ी मुसीबत लगने लगी थी। क्यों क उन्हें मेरा ववाह, ववाह के लए धन बहुत बड़ा पहाड़ लगने लगा था। अर्थात मैं ही उनके जीवन में शुरू से अंत तक कसी-न-कसी प्रकार की सरदर्द बनी रही हूँ, पहले इस लए, तब इस लए, अब इस लए। इस तरह माता-पता पर बड़ा बोझ का भाव स्त्रियों के संघर्ष का कारण बनता हैं।

कन्नड की प्र सद्ध ले खका डॉ. सारा अबुबकर जी की आत्मकथा 'होत्तु क लयुव मुन्ना' में वें लखती हैं उसकी शादी ऐसे व्यक्ति के साथ तय हुआ जिसने स्वयं कहा था क उसे दहेज नहीं चाहिए। सारा जी का परिवार संपन्न था और सुसंस्कृत। इस लए वें वर एवं उसके परिवार के लोंगो नें दहेज नहीं माँगा था। शादी के बाद स्ति थ अलग ही हुई क दहेज न लाने के कारण व्यंग्य क बाते सुनना पड़ा था। देवर और जेठ पति के कान भरते थे। ववाह के दिन सारा जी के पताजी घड़ी जो नहीं दिए। उसके पति अंत तक याद रखकर व्यंग्य करते थे। सारा जी लखती हैं-दहेज का भूत मेरे पीछे पड़कर सताता ही रहा।

आ थक संघर्ष के बारें में हिंदी और कन्नड के आत्मकथाओं में अनेक उदहारण मलते। अनिता जी लखती हैं- पति राकेश जी क मृत्यु के बाद उन्हें नौकरी करनी ही पड़ी। बच्चों की पढ़ाई, भाई का परिवार एवं माँ की देखभाल भी करना था। इसी बीच रम्मी नामक व्यक्ति से पुन र्ववाह करती है।

रम्मी कमाने लगता हैं तो इसे तिरस्कार करने लगता हैं। उनके अत्याचार से छुटकारा पाने के लए वह तलाक लेती हैं। बच्चों को योग्य शक्षा देकर अपने पैरों पर खड़े होने के लायक बनाती हैं।

अनुपमा निरंजन जी अपने 'नेनपु- संही- कहि' में आ थक संघर्ष के बारें में लखती हैं- पताजी सरकारी नौकर थे, ले कन घर में बच्चों की संख्या ज्यादा,इस लए परिवार चलाना मुश्किल था। अनुपमाजी के पास पहनने के लए ठिक कपड़े न होने के कारण वह समारोह में नहीं जाती थी। एम. बी. बी. एस. पढ़ाते समय उसके पास घड़ी और चप्पल भी नहीं थी।3000 रूपये कर्ज लेकर घर खरीदना, कर्ज से गाड़ी खरीदना, पति-पत्नि दोनों कर्ज चुकाने के लए परिश्रम करना आदि आ थक संघर्षो से जूझते रहें थे।

हिंदी और कन्नड आत्मकथाओं में पारिवारिक, आ थक आदि समस्याओं के खलाफ लड़ते समय मान सक संघर्ष का सामना करने का चत्रण हमें देखने को मलते हैं। 'सतरे और सतरे' में अनिता जी अपने पति राकेश जी की मृत्यु के बाद सारी जिम्मेदारीयों को निभाते समय मान सक संघर्ष का सामना

करती हैं। वें लखती हैं·एक साथ मकान आजी वका, बच्चों की परवरिश इन सबका मुझ पर जो मान सक तनाव छा रहा था, वह मुझें निचौड़ा जा रहा था। एक ख़ौफ!जिसका सामना मैं सुबह·श्याम करती थी।दिमाग पर हथौड़े पर हथौड़े चलते। लगता था क एक ऐसा चक्रव्यूह जिसमे घूम·घूमकर मैं दम तोड़ सकती हूँ। ले कन इसमें बाहर निकल नहीं सकती।

डॉ. सारा अबूबकर जी क आत्मकथा 'होत्तू ·कलेयुव मुन्ना' में अपनी मान सक तनाव को व्यक्त करती हैं· मुस्लिम समाज के रिति·रिवाजो एवं धा र्मक नियमों से संघर्ष करती हैं। शादी से पहले माता· पता के संकु चत वचारों से तथा शादी के बाद पति और उनके परिवारवालों के संकु चत वचारों से मान सक संघर्ष सहन करती हैं।

अमृता प्रीतम जी की 'रसीदी टिकट' साहित्यिक संघर्ष का ववरण देने वाली आत्मकथा है।अमृता जी वारिस शह को संबो धत करते हुए देश· वभाजन के समय उन्होंने जो दृश्य देखा, अनुभव कया उसी पर क वता लखी। यह क वता देश भर में तथा वदेश में भी बहुत प्र सद्धी पाई। मगर पंजाब में कई लोगों ने इसका वरोध कया।अमृता जी लखती है· जब लखी थी तब अपने पंजाब में कई पत्र पत्रिकाएं मेरे लए तोहमतों से भर गईं थी। सक्खों को यह आपत्ति थी क उन्होंने वारिसशाह को सम्बो धत क्यों की, गुरु नानक को सम्बोधन करके लखनी चाहिए थी। और कम्युनिष्ट कहते थे क मैंने लेनिन या स्टा लन को सम्बोधन करके क्यों नहीं लखी। यहाँ तक की इस क वता के वरुद्ध कई क वता लखी गईं[३००]। उनकी एक क वता पर इतना वरोध झेलना पड़ा उन्हें। इस तरह अमृता जी नें अनेक साहित्यिक संघर्ष का सामना कया हैं।

सारा अबुबकरजी मुस्लिम ले खका है।मुस्लिम औरतें घर से बाहर निकलना ही मुश्किल था। ले कन सारा जी ने अपने धर्म के सभी कुरीतियों का तथा बंधनों का कड़ा वरोध कया अपने साहित्य में। पति साहित्य में रू च नहीं रखते थे। फर भी वह आगे बढ़ती गईं। उनके कहानी एवं उपन्यासों के प्रकाशन और प्रसारण में लखा हुआ वषयों के खलाफ उसने अदालत में जाकर न्याय प्राप्त कर लया।

महिला आत्मकथाकारों ने अपनी आत्मकथों के माध्यम से समाज को स्त्री जीवन की सच्चाईयो से अवगत करवाया हैं। उन्होंने वहीं लखा जो उन्होंने जिया। उनका पारिवारिक, सामाजिक, सस्कृतिक, आ र्थक परिवेश भन्न प्रकार का रहा हैं। इस लए उनके द्वारा व्यक्त स्त्री जीवन के बहु आयमी पक्ष हमारे समुख प्रस्तुत होते हैं।

******